P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

नवीन कुमार यादव
प्राचार्य,
ताज मेमोरियल टी.टी. कॉलेज,
जगदीशपुरा, कोटपूतली,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

विद्यार्थी जीवन में सफलता तथा असफलता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बालक सफलता व असफलता को किस दृष्टि से स्वीकार करता है, यह सब उसके दारा निर्धारित आकांश स्मर पर निर्भर करता है। बालक किसी भी लक्ष्य के लिए किए गये प्रथम प्रयास में ही अपने आकांश स्तर का निर्धारण व परिवर्तन कर लेता है। सामाजिक, आर्थिक स्तर से बहुत उँचा आकांक्षा स्तर बनाने पर आवश्यक योग्यताओं के अभाव में जब वह असफलता प्राप्त करता है तो उसका समायोजन प्रभावित होता है। अतः शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक अपनी योग्यताओं व कौशलों के अनुरूप आकांक्षाओं का निर्धारण कर सके। माध्यमिक स्तर वह स्तर होता है जिसके अंत तक बालक अपनी आकांक्षाओं को निर्धारित करते हैं तथा उसी को ध्यान में रखकर वह विषय का चयन करते हैं। विद्यालय में सही निर्देशन के अभाव में बालक अपनी सीमा के अनुरूप आकांक्षा स्तर निर्धारण में असफल होता है और वह हताशा का शिकार हो जाता है। अतः शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना निर्धारित किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर संभाग के विभिन्न माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 1000 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। आकांक्षा स्तर को ज्ञात करने हेतु डॉ. वि. पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के छात्रों की तुलना में छात्राओं का आकांक्षा स्तर निम्न स्तर का पाया गया है।

मुख्य शब्द : अनुसूचित जाति, सामन्य वर्ग, आकांक्षा स्तर।

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। सर्वांगीण विकास से ताप्पर्य व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक विकास से है। शिक्षा की वह साधन है जिसका प्रयोग करके समाज अपनी संस्कृति व सभ्यता का संरक्षण व हस्तांतरण करता है। शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत बनाती है तथा संवेदनशीलता व दृष्टि को प्रखर व प्रशस्त करती है। यही कारण है कि मानव इतिहास के आदि काल से ही शिक्षा अपनी पहुँच व विस्तार को निर्धारित करती रही है। शिक्षा ही वह सीढ़ी है जिस पर चढ़कर व्यक्ति अपने आर्थिक, सामाजिक एवं व्यवसायिक स्तरों का उँचा बना सकता है। समाज की शक्ति का आधार भी शिक्षा है। समाज में रहकर व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है उसी के कारण वह स्वयं को पाश्विक प्रवृतियों से उँचा उठाता है। शिक्षा विद्यालय की चार दिवारी तक ही सीमित न होकर जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसके भंडार में वृद्धि होती है।

विद्यालय में भिन्न–भिन्न धर्म, जाति एवं वर्ग के छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं। यूँ तो विद्यालयों में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थी समान अवयवी दिखाई देते हैं किन्तु सुक्षम रूप से प्रत्येक विद्यार्थी एक दूसरे से अवयव व अनुभूति दोनो दृष्टि से सर्वथा भिन्न हैं और उनके आकांक्षा स्तर भी भिन्न होते हैं जो उनमें

मौलिकता एवं नवीनता की भावना को जन्म देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का आकांक्षा स्तर विशिष्ट होता है जो उसे भविष्य के लिए विभिन्न योजनाओं एवं उद्देश्यों के निर्धारण में सहायक होता है। उद्देश्य निर्धारण करने के बाद वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आकांक्षा रखता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए कार्य करता है। प्रत्येक व्यक्ति की उद्देश्य प्राप्ति की तीव्रता अलग–अलग होती है तथा व्यक्ति को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आकांक्षा स्तर आधार प्रदान करती है। चूँकि आकांक्षा स्तर व्यक्ति केन्द्रित पक्ष होता है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपने आकांक्षा स्तरों को अपने सामर्थ्य के अनुसार तय करता है। कभी–कभी वह इतने उँचे आकांक्षा स्तर निर्धारित कर लेता है कि उन्हें प्राप्त करने में असफल हो जाता है। इससे उसका समायोजन प्रभावित होता है। अतः शिक्षा व्यवस्था ऐसी हानी चाहिए जिससे बालक अपनी योग्यताओं व कौशलों के अनुरूप आकांक्षाओं का निर्धारण कर सके। माध्यमिक स्तर वह स्तर होता है जिसके अन्त तक बालक अपनी आकांक्षाओं का निर्धारण करते हैं तथा उसी को ध्यान में रखकर शिक्षा प्राप्त करना चाहता है। विद्यालय में सही निर्देशन के अभाव में बालक अपनी स्थिति की सीमा से उपर आकांक्षा स्तर बना लेता है। जिससे अच्छी प्रतिष्ठा विकसित होने का अवसर प्राप्त नहीं होता है। अतः माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर के अध्ययन को शोधकर्ता ने अपने शोध का विषय चुना है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर संभाग के माध्यमिक स्तर के कुल 1000 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इसमें 500 विद्यार्थी अनुसूचित जाति और 500 विद्यार्थी सामान्य वर्ग के शामिल किये गये। इनमें प्रत्येक वर्ग से 250 छात्र तथा 250 छात्राओं को चुना गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करने हेतु डॉ. वि. पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांन्तिक अनुपात आदि सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना संख्या 1

माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या – 1

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांन्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	250	14.25	2.80	2.16	0.05 स्तर पर असार्थक
छात्रा	250	19.07	3.25		

उपरोक्त तालिका संख्या 1 में माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 14.25 एवं 19.07 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.80 एवं 3.25 है। प्राप्तांकों की गणना के आधार पर क्रांन्तिक अनुपात का मान 2.16 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता अंश 498 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मान 1.96 से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या 2

माध्यमिक स्तर के सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या – 2

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांन्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	250	22.20	2.90	1.52	0.05 स्तर पर सार्थक
छात्रा	250	16.33	2.12		

उपरोक्त तालिका संख्या 2 में माध्यमिक स्तर के सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 22.20 एवं

16.33 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.90 एवं 2.12 है। प्राप्तांकों की गणना के आधार पर क्रांन्तिक अनुपात का मान 1.52 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता अंश 498 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मान 1.96 से कम है। अतः माध्यमिक स्तर के सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या 3

माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या – 3

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांन्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति	500	24.10	3.18	3.98	0.05 स्तर पर असार्थक
सामान्य वर्ग	500	28.08	2.70		

उपरोक्त तालिका संख्या 3 में माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 24.10 एवं 28.08 है तथा मानक विचलन क्रमशः 3. 18 एवं 2.70 है। प्राप्तांकों की गणना के आधार पर क्रांन्तिक अनुपात का मान 3.98 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता अंश 498 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मान 1.96 से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर होता है। परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अर्थात अनुसूचित जाति के छात्रों की अपेक्षा छात्रओं का आकांक्षा स्तर उच्च पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर के सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अर्थात सामान्य वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा छात्रों का आकांक्षा स्तर उच्च पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अर्थात माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर उच्च पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1973) "शिक्षा में शोध", प्रेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा. लि. नई दिल्ली।

मंगल एस.के. (1996): शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाश ब्रदर्श लुधियाना।

कपिल एच.के. (2004): "अनुसंधान विधियाँ", हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन आगरा।

राय, पारसनाथ (2012): "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

सिंह अरूण कुमार (2013): "मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ" मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन नई दिल्ली।

वशिष्ठ, के.सी. (2015): "माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" परिपेक्ष्य, वर्ष 22, अंक 3, दिसंबर 2015।

कुमार विरेन्द्र एवं रवि शंकर (2018) : "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालय स्वरूप का अध्ययन" रिव्यू ऑफ रिसर्च जनरल, वोल्यूम 7, अंक 9, जून 2018।

तिवारी, ऋत्विज (2018): "उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन" ग्लोबल जनरल ऑफ इन्जिनियरिंग साईन्स एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 5 अंक 9, सितम्बर 2018